INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2020; 2(2): 18-20
Received: 29-05-2020
Accepted: 30-06-2020

डॉ. सोनी कुमारी
अतिथि प्राध्यापिका,
इतिहास–विभाग, डॉ. एस.के.एस महिला महाविद्यालय, मोतिहारी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सोनी कुमारी
अतिथि प्राध्यापिका,
इतिहास–विभाग, डॉ. एस.के.एस महिला महाविद्यालय, मोतिहारी, बिहार, भारत

भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि और बिहार

डॉ. सोनी कुमारी

सारांश
भारत छोड़ो आंदोलन हो या भारतीय स्वाधीनता संग्राम की कोई भी लड़ाई, उसमें बिहार की भूमिका कभी कमतर नहीं रही है। बिहार वीरों की धरती है, आंदोलन की धरती है, संघर्ष की धरती है, यह सर्वविदित है। जिस समय महात्मा गांधी के कुशल नेतृत्व में भारतीय स्वाधीनता के लिए संघर्ष हो रहा था, उस समय बिहार के आंदोलनकारियों और स्वाधीनता सेनानियों ने अपनी जान की कुर्बानी देकर अपनी भूमिका को सुनिश्चित किया था। 'भारत छोड़ो आंदोलन' का नेतृत्व जब किया जा रहा था, उससे पूर्व ही बिहार वासियों ने इसकी पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी। इस पृष्ठभूमि को 'चंपारण सत्याग्रह', 'बेगूसराय गोलीकांड', 'बिहार किसान आंदोलन', 'बिहार मजदूर आंदोलन' तथा 'बिहार क्रांति आंदोलन' के रूप में देखा जा सकता है। अतएव कहा जा सकता है कि भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की पृष्ठभूमि अत्यंत मजबूत और चिरस्मरणीय है।

भूमिका
1947 ई. के भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस आंदोलन में बिहार सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में शामिल था। 31 जुलाई को राजेन्द्र प्रसाद द्वारा बिहार प्रदेश कांग्रेस समिति की बैठक बुलाकर कांग्रेसी कार्यक्रम को भावी संघर्ष के लिए तैयार रहने की बात की गई। हालाँकि आंदोलन शुरू होते ही भारत सहित बिहार के बड़े–बड़े नेताओं की गिरफ्तारी हो गई थी, जिसमें राजेन्द्र प्रसाद एवं जयप्रकाश नारायण भी शामिल थे। लेकिन बिहार की जनता कहाँ रूकने वाली थी। उन्होंने बिना नेतृत्व के अपनी भागीदारी बनाए रखी और अंग्रेजों को सोचने के लिए मजबूर कर दिया। इस आंदोलन में बिहार के लगभग 15000 से अधिक लोग बंदी बनाए गए थे, 7000 से ज्यादा लोगों को सजा मिली और 1374 बिहारियों ने अपनी जान की कुर्बानी दी। जन भागीदारी की सबसे बड़ी मिशाल 11 अगस्त, 1942 को देखने को मिला। यह बिहार और स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास का सबसे अविस्मरणीय गोलीकांड में बिहार के 7 छात्र शहीद और कई घायल हो गये थे। [1] 11 अगस्त के दिन विधायिका का एक जुलूस सचिवालय भवन के सामने विधायिका भवन पर राष्ट्रीय झंडा लहराने की कोशिश कर रहा था, तभी पटना के जिलाधीन डब्ल्यू. जी. आर्चर के आदेश पर पुलिस गोलीबारी में 7 छात्र मारे गये तथा अनेक घायल हो गये। मरने वाले छात्रों में उमाकांत सिन्हा, रामानंद सिंह, सतीश प्रसाद झा, देवीपद चौधरी, रामगोविन्द सिंह, राजेन्द्र सिंह तथा जगतपति कुमार थे।

इस गोलीकांड के बाद बिहार की जनता में उबाल आ गया। जगत नारायण लाल की अध्यक्षता में एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसके तहत संचार सुविधाओं को ठप करने तथा सरकारी कार्यों में अवरोध डालने का निर्णय लिया गया। इसके फलस्वरूप पूरे बिहार की रेल पटरियों को नुकसान पहुँचाया गया। तार तथा टेलीफोन की लाइनें काट दी गईं। डाकघरों, थानों, रेलवे स्टेशनों आदि सरकारी इमारतों को जला दिया गया तथा पुलिस पर आक्रमण किया गया।

छोटानागपुर क्षेत्र के आदिवासियों ने खासकर ताना भगत आंदोलन से जुड़े लोगों ने भी अपने क्षेत्र में ब्रिटिश सत्ता को चुनौती पेश की। जमशेदपुर स्थित टिस्को एवं डालमियानगर स्थित रोहतास इंडस्ट्रीज के श्रमिकों ने हड़ताल का आयोजन किया तथा विरोध प्रदर्शन के लिए सड़क पर उतर आए। [2]

बिहार में महिलाओं ने भी इस आंदोलन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। छपरा में शांति देवी के नेतृत्व में एक जुलूस पर लाठी चार्ज करना चाहा तो इन्होंने 'पुलिस हमारा भाई है' का नारा लगाया। इस नारे से प्रभावित होकर पुलिस के जवानों ने लाठी चलाने से इंकार कर दिया। [3]

'भारत छोड़ों आंदोलन' के दौरान कई दलों अथवा समूहों का निर्माण हुआ, जिससे जुड़कर जनता रणनीतियों के तहत सरकार के खिलाफ मुकाबला करती थी। आजाद दस्ता, ध्वंसात्मक कमेटी, महिला चरखा समिति, सियाराम दल इत्यादि कई ऐसे बिहार जनसमूह थे, जिन्होंने इस आंदोलन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

भारत छोड़ो आंदोलन के निमित्त बिहार में कई संस्थाओं का निर्माण हो गया, जिन्होंने इस आंदोलन को उग्र रूप प्रदान किया। ऐसे ही संस्थाओं में है– 'आजाद दस्ता'। यह भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान क्रांतिकारियों द्वारा प्रथम गुप्त गतिविधियाँ थीं। जयप्रकाश नारायण ने इसकी स्थापना नेपाल की तराई के जंगलों में रहकर की थीं। इसके सदस्यों को छापामार युद्ध एवं विदेशी शासन को अस्त–व्यस्त एवं पंगु करने का प्रशिक्षण दिया जाने लगा।

बिहार प्रांतीय आजाद दस्ते का नेतृत्व सूरजनारायण सिंह के अधीन था, परंतु भारत सरकार के दबाव में मई, 1943ई. में जयप्रकाश नारायण, डॉ. लोहिया, रामवृक्ष बेनीपुरी, बाबू श्यामनंदन, कार्तिक प्रसाद सिंह, इत्यादि नेताओं को गिरफ्तार कर लिया और हनुमान नगर जेल में डाल दिया गया। आजाद दस्ता के निर्देशक बाबू श्यामसुंदर प्रसाद थे। मार्च, 1943ई. में राजविराज, नेपाल में प्रथम गुरिल्ला प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गई। [4]

सियाराम दल–बिहार के गुप्त क्रांतिकारी आंदोलन का नेतृत्व सियाराम दल ने स्थापित किया था। इसके क्रांतिकारी दल के कार्यक्रम की चार बातें मुख्य थीं– धन संचय, शस्त्र संचय, शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण तथा सरकार का प्रतिरोध करने के लिए जनसंगठन बनाना। सियाराम दल का प्रभाव भागलपुर, मुंगेर, किशनगंज, बलिया, सुल्तानगंज, पूर्णिया आदि जिलों में था। सियाराम सिंह सुल्तानगंज के तिलकपुर गाँव के निवासी थे। क्रांतिकारी आंदोलन में हिंसा और पुलिस दमन के अनगिनत उदाहरण मिलते हैं। [5]

मुंगेर जिले के तारापुर थाना में तिरंगा फहराते हुए 60 क्रांतिकारी शहीद हुए थे। 15 फरवरी 1932ई. को दोहपर सैकड़ों आजादी के दीवाने मुंगेर जिला के तारापुर थाने पर तिरंगा लहराने निकल पड़े। उन अमर सेनानियों ने हाथों में राष्ट्रीय झंडा और होठों पर वंदे मातरम्, भारत माता की जय नारों की गूँज लिए हँसते–हँसते गोलियाँ खाई थी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सबसे बड़े गोलीकांड में देशभक्त पहले लाठी–गोली खाने को तैयार होकर घर से निकलते थे। 50 से अधिक सपूतों की शहादत के बाद स्थानीय थाना भवन पर तिरंगा लहराया। आजादी मिलने के बाद से हर साल 15 फरवरी को स्थानीय जागरूक नागरिकों के द्वारा तारापुर दिवस मनाया जाता है। जालियावाला बाग से भी बड़ी घटना थी जातपुर गोलीकांड। सैकड़ों लोगों ने धावक दल को अंग्रेजों के थाने पर झंडा फहराने का जिम्मा दिया था और उनका मनोबल बढ़ाने के लिए जनता खड़ी होकर भारत माता की जय, वंदे मातरम् आदि का जयघोष कर रहे थे। भारत माँ के वीर बेटों के ऊपर अंग्रेजों के कलक्टर एवं एस.पी. के नेतृत्व में गोलियाँ दागी गयी थी। गोली चल रही थी, लेकिन कोई भाग नहीं रहा था। लोग डटे हुए थे। इस गोलीकांड के बाद कांग्रेस ने प्रस्ताव पारित कर हर साल देश में 15 फरवरी को तारापुर दिवस मनाने का निर्णय लिया था। घटना के बाद अंग्रेजों ने शहीदों का शव वाहनों में लादकर सुलतानगंज की गंगा नदी में बहा दिया था। शहीद सपूतों में से केवल 13 की पहचान हो पायी थी। [6]

भारत छोड़ो की पृष्ठभूमि तैयार करने में बिहार में अनेक क्रांतिकारी आंदोलन हुए, जिन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं में देखा जा सकता है–

चंपारण सत्याग्रह आंदोलनः

बिहार का चंपारण जिला 1917ई. में गांधी द्वारा भारत में सत्याग्रह के प्रयोग का पहला स्थान था। चंपारण में अंग्रेज भूमिपतियों द्वारा किसानों पर निर्मम शोषण किया जा रहा था। जमींदारों द्वारा किसानों को जबरन नील की खेती के लिए बाध्य किया जाता था। प्रत्येक बीघे पर उन्हें तीन कट्ठा में नील की खेती अनिवार्यतः करनी पड़ती थी। इन्हें तीन कठिया व्यवस्था कहा जाता था। बदले में उचित मजदूरी नहीं दी जाती थी। इसी कारण से किसानों एवं मजदूरों में भयंकर आक्रोश था। सन् 1916ई. में लखनऊ अधिवेशन में चंपारण के राजकुमार शुक्ल जो स्वयं जमींदार के आर्थिक शोषण से ग्रस्त थे, भाग लिया।

26 दिसम्बर, 1936ई. को पटना में मुस्लिम लीग का 26वाँ अधिवेशन हुआ था। 29 दिसम्बर, 1938ई. को अखिल भारतीय मुसलमान छात्र सम्मेलन हुआ। 4 जनवरी, 1932ई. को राजेन्द्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिंह, ब्रजकिशोर प्रासाद, कृष्णबल्लभ सहाय आदि नेतागण को गिरफ्तार किया गया। रैम्जे मैक्डोनाल्ड द्वारा हरिजश्न को कोटा की व्यवस्था से अस्त–व्यस्त होगया। 12 जुलाई, 1933ई. को सामुदायिक सविनय अवज्ञा के स्थान पर व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा का प्रारूप तैयार किया गया। 1927ई. में पटना युवा संघ की स्थापना की गई। [7]

नंगी हड़ताल 4 मई, 1930ई. को गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद स्वदेशी के प्रचार एवं विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया गया। छपरा के कैदियों द्वारा वस्त्रों का बहिष्कार किया गया। छपड़ा के कैदियों ने वस्त्र पहनने से इंकार कर दिया। नंगे शरीर रहकर विदेशी वस्त्रों का विरोध किया गया।

बेगूसराय गोलीकांड एवं बिहार किसान आंदोलनः

26 जनवरी, 1931ई. को प्रथम स्वाधीनता दिवस को पूरे जोश से मनाने का निर्णय किया गया। रघुनाथ ब्रह्मचारी के नेतृत्व में बेगूसराय जिले के परहास से एक जुलूस निकाला गया। डी.एस. पी. वशीर अहमद ने गोली चलाने का आदेश दे दिया। छह व्यक्ति की घटना स्थल पर मृत्यु हो गई। देवीनाथ मंदिर के सामने गोलीकांड हुआ था।

1919 में मधुबनी जिले के किसान स्वामी विद्यानंद ने दरभंगा राज के विरूद्ध विरोध किया। 1922–33ई. में मुंगेर में बिहार किसान सभा का गठन मोहम्मद जुबैर और श्री कृष्ण सिंह द्वारा किया गया। 1928ई. में स्वामी सहजानंद सरस्वती ने प्रांतीय किसान सभा की स्थापना में कार्यानंद शर्मा, राहुल सांकृत्यायन, पंचानन शर्मा, यदुनंदन शर्मा आदि वामपंथी नेताओं का सहयोग मिला। स्वामी सहजानंद ने 4 मार्च, 1928ई. को किसान आंदोलन प्रारंभ किया। इसी वर्ष सरदार वल्लभ भाई पटेल की बिहार यात्रा हुई और अपने भाषणों से किसानों कोई चेतना से जागृत किया। बाद में इस आंदोलन को यूनाइटेड पॉलिटिकल पार्टी का नाम दिया गया।

1933ई. में किसान सभा द्वारा जाँच कमेटी का गठन किया गया। कमेटी द्वारा किसानों की दयनीय दशा के प्रति केन्द्रीय कर लगाया गया। 1936ई. में अखिल भारतीय किसान सभा का गठन हुआ था। इसके अध्यक्ष स्वामी सहजानंद स्वामी थे और महासचिव प्रो. एन.जे. रंगा थे।

बिहार में मजदूर आंदोलनः

बिहार में किसानों के समान मजदूरी का भी संठन बना। बिहार में औद्योगिक मजदूर वर्ग ने मजदूर आंदोलन चलाया। 1917ई. में बोल्शेविक क्रांति एवं साम्यवादी विचारों में परिवर्तन के साथ–साथ प्रचार–प्रसार हुआ। दिसम्बर, 1919ई. में प्रथम बार जमालपुर (मुंगेर) में मजदूरों की हड़ताल प्रारंभ हुई। 1920ई. में एस.एन. हैदर एवं व्यायकेश चक्रवर्ती के मार्गदर्शन में जमशेदपुर वर्क्स एसोसिएशन बनाया गया। 1925ई. और 1928ई. के बीच मजदूर संगठन की स्थापना हुई। सुभाषचन्द्र बोस, अब्दुलबारी, जयप्रकाश नारायण इसके प्रमुख नेता थे। [8]

बिहार में क्रांतिकारी आंदोलनः

बंग–भंग विरोधी आंदोलन से बिहार तथा बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन प्रारंभ हो गया। बिहार के डॉ. ज्ञानेन्द्रनाथ, केदारनाथ बनर्जी एवं बाबा ठाकुर दास प्रमुख थे। बाबा ठाकुर दास ने 1906–07ई. में पटना में रामकृष्ण मिशन सोसायटी की स्थापना

की और समाचार पत्र के द्वारा दी मदरलैंड का संपादन एवं प्रकाशन शुरू किया। 1908 ई. में खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी नामक दो युवकों ने मुजफ्फरपुर के जिला जज डी.एच. किंग्स फोर्ड की हत्या के प्रयास में मुजफ्फरपुर के नामी वकील की पत्नी प्रिंग्ल कैनेडी की बेटी की हत्या के कारण 11 अगस्त, 1908 को फाँसी दी गई। इस घटना के बाद भारत को आजाद कराने की भावना प्रबल हो उठी। रेवेती नाग, चुनचुन पांडेय, वटेश्वर पांडेय, छोटन सिंह, नालिन बागची आदि इस समय प्रमुख नेता थे। [9]

इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में बिहार का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। 1857ई. के विद्रोह का प्रभाव उत्तरी एवं मध्य भारत तक ही सीमित रहा। इस आंदोलन में मुख्य रूप से शिक्षित एवं मध्य वर्गों का योगदान रहता था।

राष्ट्रीय चेतना की जागृति में बिहार ने अपना योगदान निरंतर जारी रखा। बिहार और बंगाल राष्ट्रीय चेतना का प्रमुख केन्द्र रहा। सार्वजतनिक गठन की 1880ई. में नींव रखकर भारतीय जनता में राष्ट्रीयता की भावना को जगाया। 1885ई. में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हो चुकी थी। 1886ई में कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में बिहार के कई प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

निष्कर्षः

'भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठ भूमि और बिहार' शीर्षक शोधालेख के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उक्त स्वाधीनता आंदोलन में बिहार का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। 1942ई. के पूर्व ही बिहार के विभिन्न–किसान, मजदूर और विद्यार्थियों के आंदोलन ने इसकी पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी। बिहार केवल बुद्ध, महावीर, और विद्यपति की धरती नहीं है, वरन् यह वीरों और आंदोलनकारियों की भी धरती है। देश की मिट्टी ने जब–जब आवाज दी है बिहार के आंदोलनकारी अपनी जान हथेली पर लिए सबसे आगे दौड़ पड़े हैं। भारत छोड़ो आंदोलन की जब तैयारी की जा रही थी, तबसे पूर्व ही बिहारवासियों ने अंग्रेजों को दर–बदर करने के लिए अनेक विद्रोह कर रखे थे, जिन्हें एक तरह से 'भारत छोड़ो आन्दोलन की पृष्ठभूमि या प्रेरक संदर्भ' कह सकते हैं।

संदर्भ सूचीः

1. हिन्दी विश्वकोश, संपा.–नगेन्द्रनाथ बसु, पृ.–212
2. समयांतर, मार्च, 2005, सं.–पंकज विष्ट, पृ.–56
3. इंडिया टुडे, फरवरी, 2005, सं.–शेफाली वसुदेव, पृ.–30–31
4. वही, पृ.–35
5. महात्मा गांधीः व्यक्ति और विचार, विश्वप्रकाश गुप्ता, मोहिनी गुपता, पृ.–162
6. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, बी.पी. वर्मा, पृ.–06
7. वही, पृ.–7
8. भारत का इतिहास, रोमिला थापर, पृ.–307
9. भारतीय स्वाधीनता और बिहार, डॉ. सुभाषचनद्र, पृ.–167